फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 310 1/– अप्रैल 2014

चौतरफा गहन, घना मन्थन

फैक्ट्री रिहा करते उफान। फैक्ट्रियों पर से मैनेजमेन्टों का कब्जा हटाना। फैक्ट्रियों को समूहों के लिये स्वतन्त्र स्थल बना देना। ऐसे माहौल का निर्माण जिसमें स्वयं को, एक-दूसरे को, और दुनिया को नये सिरे से देखने का आमन्त्रण है। खूब बातचीत, गहरी नीन्द, मनन-चिन्तन, सोच-विचार, आदान-प्रदान। किसी भी समय अन्ताक्षरियों में झूम जाना। नये रिश्तों का निर्माण और स्वतन्त्र सामुहिक जीवन की सम्भावनाओं के प्रवाहों में बहना।

यह आज के आम हालात हैं।

2010 : प्लॉट 7 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित नपिनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री में मई माह में एक दिन 800 मजदूर (100 महिला और 700 पुरुष) काम बन्द कर एक स्थान पर बैठ गये। रात होने पर महिला मजदूर फैक्ट्री से अपने निवास स्थानों पर गई और अगले दिन सुबह फैक्ट्री में आ कर पुरुष मजदूरों के संग बैठी। यह सिलसिला चार दिन चला।

2014 : प्लॉट 7 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित नपिनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स फैक्ट्री में 24 मार्च को ए, जनरल, और बी-शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री के अन्दर बैठ गये। उसी दिन, प्लॉट 131 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित इसी कम्पनी की फैक्ट्री में तीन शिफ्टों के मजदूर भी काम बन्द कर बैठ गये। और इसी कम्पनी की 753-754 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में मजदूर भी काम बन्द कर बैठ गये। तीनों फैक्ट्रियों में महिला मजदूर रात होने पर फैक्ट्रियों से बाहर नहीं निकली। स्त्री-पुरुष रिश्तों में यह एक बड़े परिवर्तन की अभिव्यक्ति है। अभी की फरवरी में बैक्सटर दवाई फैक्ट्री में 110 महिलायें और 140 पुरुष 18 तारीख की रात मैनेजमेन्ट, श्रम विभाग, और पुलिस के दबाव के बावजूद फैक्ट्री से नहीं निकले थे।

नपिनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स की तीनों फैक्ट्रियों में स्त्री और पुरुष मजदूर 24 मार्च 24 घण्टे, 25-26-27-28-29-30-31 मार्च-1 अप्रैल-2 अप्रैल को भी चौबीसों घण्टे फैक्ट्रियों में रह रहे हैं। मानवद्रोही कम्पनी ने 24 मार्च से ही तीनों फैक्ट्रियों की कैन्टीनें बन्द कर रखी हैं। तीनों फैक्ट्रियों के सी-शिफ्ट के मजदूर जो कि बाहर हैं, वे फैक्ट्रियों के अन्दर अपने साथियों को भोजन पहुँचा रहे हैं। कई अन्य फैक्ट्रियों में कार्यरत मजदूर इन फैक्ट्रियों के अन्दर बैठे मित्रों से सम्पर्क में हैं, चर्चा कर रहे हैं, बातें फैला रहे हैं, खान-पान के प्रबन्ध में हाथ बँटा रहे हैं।

इस सिलसिले में मारुति सुजुकी मानेसर, सुजुकी पावरट्रेन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल, सत्यम ऑटो, बजाज मोटर, इन्ड्युरेन्स, हाइलैक्स, लुमैक्स, डिघानिया, हीरो होण्डा, होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर, हरसूर्या हैल्थकेयर, अमेटीप मशीन टूल्स के उदाहरण जाने-पहचाने हैं।

हम पूरे भरोसे के साथ कह सकते हैं कि सात अरब लोगों में एक अस्थिरता है। यह अस्थिरता रस-पूर्ण जीवन की इच्छाओं से प्रेरित है। यह एक रचनात्मक अचम्भे की अभिव्यक्ति है।

फैक्ट्री-द्रोहियों का उभार। समूहों में मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर आक्रमण करना। भयभीत मैनेजमेन्टें। युद्धस्थल बनते औद्योगिक क्षेत्र। बढती सँख्या में राजनीतिक कैदी बनते मजदूर। जमानत पर छोड़ने से इनकार करते न्यायालय। कार्यस्थलों पर मैनेजरों-सुपरवाइजरों के दुर्व्यवहार पर बढती रोक। रियायतों के खेलों का लड़खड़ाने लगना। बिचौलियों का असंगत होना। मजदूरों के बीच आदान-प्रदानों और तालमेलों में नई गति।

यह आज के आम हालत हैं।

28 मार्च, शुक्रवार की सुबह साढे दस बजे सैक्टर-18, गुड़गाँव स्थित ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्री में एक टेलर की मशीन में आये करंट से मृत्यु हुई। कम्पनी ने पुलिस बुलाई और इसे दिल का दौरा पड़ने से हुई मृत्यु बताया। ओरियन्ट क्राफ्ट में कार्यरत 1200 स्त्री व पुरुष मजदूरों ने फैक्ट्री के अन्दर विद्रोह किया और फिर सड़क पर निकल आये। अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर इन मजदूरों के साथ आ मिले। ढाई बजे से 3 ए सी पी, एक डी सी पी और सैक्टर-18 व उद्योग विहार सहित गुड़गाँव वैस्ट जोन के आधा दर्जन थानों की पुलिस ने मजदूरों के खिलाफ मोर्चा बाँधा। चार बजते-बजते पत्थरबाजी, लाठीचार्ज, आँसू गैस, फायरिंग। एक ए सी पी समेत 10 पुलिसवाले घायल, 40 वाहन क्षतिग्रस्त। कई मजदूर व रेहड़ी चालक घायल। पुलिस ने सैंकड़ों मजदूरों पर केस बनाये। अब कई मजदूर गिरफ्तार हैं और अज्ञात अन्य का पीछा किया जा रहा है। वरकरों के मुताबिक 26 मार्च को भी सिलाई मशीन में करंट आने से एक महिला मजदूर की मृत्यु हुई थी।

इस सिलसिले में दो साल पहले ओरियन्ट क्राफ्ट की ही सैक्टर-37, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में मजदूरों की मैनेजमेन्ट और पुलिस से घमासन भिड़न्त हुई थी। हाल ही में गाजियाबाद में ग्रैजियेनो, फरीदाबाद में लखानी शूज, आई.एम.टी. मानेसर में मारुति सुजुकी, नोएडा में, ओखला औद्योगिक क्षेत्र में, पलवल के पृथला-बघौला क्षेत्र में शिवानी लॉक्स-बायो मेडिकल-हरियाणा वायर-महिन्द्रा-वमानी ओवरसीज-एस के एच-ऑटो इग्निशन मैनेजरों, फैक्ट्री बिल्डिंगों, कम्पनी और पुलिस से मजदूर टकराये हैं, भिड़े हैं। सच में कह सकते हैं कि मैनेजर, इमारत, पुलिस तो प्रतीक हैं, असली बात तो वह सामाजिक सम्बन्ध है जिसे वे व्यक्त करते हैं..... इस सिलसिले में ही सामाजिक सम्बन्ध उभर कर सामने आते हैं।

आज हम पूरे भरोसे के साथ कह सकते हैं कि सात अरब लोगों में एक अस्थिरता है। एक संकट-पूर्ण अचम्भा उससे जुड़ा हुआ है। इतनी अधिक धन-सम्पदा का जो उत्पादन हो रहा है, वो जाता कहाँ है ? उसमें से आम जीवन में इतना कम क्यों आता है ? ■

घूम रहे पर्चे–एस एम एस–ईमेल

✶ फरीदाबाद में तीन फैक्ट्रियों में काम कर रहे हम दस लोग एक साथ बैठे। आपस में बातें की। तय किया कि अपनी बातें और लोगों के साथ साझा करें। इसलिये आप यह पढ रहे हैं। आप भी हमारी तरह अपनी बातें साझा करने के बारे में विचार करें।

ओसवाल कास्टिंग, प्लॉट 48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, ***महावीर डाईकास्टिंग,*** प्लॉट 153 व 165 सैक्टर-24, ***ओसवाल कास्टिंग II प्लान्ट,*** प्लॉट 21-22-23 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्रियों में हम मजदूर हैं। तीनों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं — महीने में दो दिन ही मिलते हैं बारहों महीने। दुगुनी दर की बजाय ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तीनों फैक्ट्रियों में काम स्थाई है और मजदूर अस्थाई हैं...... ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर बरसों से इस अथवा उस फैक्ट्री में एक ही स्थान पर काम कर रहे हैं। वर्दी-जूते तक नहीं देते और एक्सीडेन्ट होने पर एम्बुलैन्स नहीं — है ही नहीं। फण्ड व ई.एस.आई. नहीं और जिनके हैं उन्हें दवाई नहीं मिलती क्योंकि कम्पनी पैसे जमा नहीं करती। काम मन्दा होने पर 8 घण्टे की ड्युटी, सप्ताह में दो दिन उत्पादन बन्द, सुपरवाइजरों-मैनेजरों को असभ्यता से पेश आने के निर्देश। न्यूनतम वेतन में भी हेराफेरी और बोनस देते ही नहीं। सरकारी विभागों के अधिकारी आते हैं और पैसे ले कर चले जाते हैं। छह महीने पहले, अक्टूबर 2013 में फैक्ट्री के अन्दर एक मजदूर की मृत्यु..... परिवार को हिसाब के पैसे नहीं दिये हैं, दाह संस्कार के लिये कहे पैसे भी अभी तक नहीं दिये हैं। इन सब बातों को कोई सुपरवाइजर-मैनेजर उठाता है तो उसे भी नौकरी से निकाल दिया जाता है। इधर तो मैनेजरों की तनखा से कम्पनी 10-10 हजार रुपये जबरन काटने लगी है।

इस-उस बात में थोड़ा-बहुत फर्क छोड़ कर देखें तो रोने-धोने वाली यह बातें चारों तरफ दिखाई देती हैं। इन्हें क्यों झेलें हम ?

✶ हर चीज की सीमा होती है। सब हदें पार हो गई हैं। मैं एक युवक हूँ और इस समय फरीदाबाद में प्लॉट 37-38, सैक्टर-58 स्थित ***श्याम टैक्स*** फैक्ट्री में काम कर रहा हूँ। हम दुनिया-भर के लिये टी-शर्ट और सूती जैकेट बनाते हैं। श्याम टैक्स में करीब दो हजार मजदूर हैं। ग्रे माल का स्टॉक लगा है और जनवरी से प्रिन्टिंग विभाग में प्रतिदिन सुबह साढे नो से रात 2 बजे तक की शिफ्ट है। रविवार को भी काम। इधर 10 दिन से रात 8 से अगली सुबह 8 की नाइट शिफ्ट भी शुरू कर दी है पर फिर भी सुबह साढे नो बजे काम आरम्भ करने वालों को रात दो बजे ही छोड़ते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करने की बजाय कम्पनी पैसे सिंगल रेट से देती है। पेट न्यारे-न्यारे हैं इसलिये रोटी के लिये कुछ को 40 रुपये और कुछ को 60 रुपये कम्पनी देती है और किसी रोज चमत्कार हुआ, रात 12 बजे तक ही काम करवाया तो रोटी के लिये सब को 20-20 रुपये !

श्याम टैक्स फैक्ट्री में इम्ब्राइड्री विभाग में दिन की शिफ्ट 11 घण्टे की और रात की शिफ्ट 13 घण्टे की है। महीने के तीसों दिन काम। शिफ्ट 15 दिन में बदलती है तब 16 घण्टे और 15 घण्टे काम का सिलसिला चलता है।

नियम-कानून कम्पनी की सुविधा अनुसार हैं। कुछ मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं, कुछ की सिर्फ ई.एस.आई. है, कुछ मजदूरों की न ई.एस.आई. है और न पी.एफ. है। हाँ, कई शिकायतों के बाद कम्पनी ने कैन्टीन ठेकेदार बदला है और अब भोजन पहले से ठीक है।

✶ सारी व्यवस्था भ्रष्ट हो रखी है। धोखाधड़ी कम्पनी ने की और धोखाधड़ी का आरोप साहबों ने मजदूर पर लगाया। बात ट्रैक्टर बनाने वाली ***एस्कोर्ट्स*** कम्पनी की है। मजदूर के कदमों ने एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट की धोखाधड़ी की परत-दर-परत उघाड़ी है।

21 मई 2012 को एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट में एक मजदूर , सत्येन्द्र को परसनल विभाग में बुला कर अधिकारी बोले कि एल आई सी वाले तुम्हारी जीवन धारा राशि जमा नहीं कर रहे, अपनी पॉलिसी लाओ। दस्तावेज दिखाने पर साहब बोले कि तुम ने धोखा किया है, बिना कम्पनी को बताये पॉलिसी का समर्पण कर के पैसे ले लिये हैं, एल आइ सी के चेक का यह नम्बर है, कार्पोरेशन बैंक के इस खाता नम्बर में 14.7.2005 को 23,482 रुपये जमा हुये हैं , अपनी बैंक डीटेल लाओ, फ्राड के लिये कम्पनी तुम्हारे खिलाफ एक्शन लेगी।

सत्येन्द्र को यह सब झूठ-ही-झूठ लगा। बैंक गया। इतने पुराने विवरण के लिये स्टेट बैंक ऑफ पटियाला ने 450 रुपये लिये। बैंक डीटेल में बताये गये एल आई सी चेक का कहीं कोई जिक्र नहीं था। थोड़ी राहत की साँस ली और भाग-दौड़ शुरू की।

एस्कोर्ट्स समूह के छह अधिकारियों से सत्येन्द्र मिला। थर्ड प्लान्ट के परसनल विभाग में बेनेफिट डिपार्ट मैनेजर, परसनल ऑफिसर, फस्ट प्लान्ट में बैठते बेनेफिट डिपार्ट हैड, परसनल मैनेजर, फार्मट्रैक प्लान्ट परसनल मैनेजर, चीफ ऑफ क्वालिटी कन्ट्रोल। सच्चाई बयान करता आवेदन प्रत्येक को दिया। किसी अधिकारी ने आवेदन की पावती दी तो किसी ने वैसे ही रख लिया। लेकिन सब अधिकारी कहते रहे कि तुम ने धोखाधड़ी की है, अब एस्कोर्ट्स में नौकरी नहीं कर पायेगा।

सत्येन्द्र जीवन बीमा निगम के दिल्ली में नेहरू प्लेस और कनॉट प्लेस कार्यालयों में गया। फरीदाबाद में सैक्टर-12 थाने गया। न्यायालय गया। सूचना के अधिकार कानून के तहत आवेदन किये। अन्ततः पता चला कि एल आई सी का कथित चेक 14.7.2005 को कार्पोरेशन बैंक की ग्रेटर कैलाश- II , दिल्ली शाखा के जिस खाते में जमा हुआ था वह एस्कोर्ट्स कम्पनी का खाता था.....

1990 में एस्कोर्ट्स के सब मजदूरों (तब करीब 14,000 स्थाई मजदूर थे) को एल आई सी की जीवन धारा पेन्शन प्लान पॉलिसी के तहत लाया गया था। एजेन्ट जिसे कमीशन मिला उसका पता नहीं पर चर्चा है कि किसी बड़े साहब की पत्नी थी। प्रत्येक मजदूर की तनखा से वर्ष में 720 रुपये एल आई सी में देने थे। एस्कोर्ट्स कम्पनी ने आरम्भ में 87 रुपये और प्रत्येक तीन वर्षीय समझौते में 30 रुपये बढा कर हर मजदूर के लिये इस पेन्शन प्लान में एल आई सी में जमा करने थे। लेकिन कम्पनी ने अपने अंश में एक रुपया भी नहीं बढाया, वर्ष में 87 रुपये ही रहा, जबकि अब तक यह 210 रुपये हो जाना चाहिये था। इतना ही नहीं, एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने बिना मजदूरों को बताये एल आई सी में पेन्शन प्लान पॉलिसी समर्पण की प्रक्रिया शुरू कर दी। किसी मजदूर के हस्ताक्षर नहीं हैं, दस्तावेजों पर साहबों ने फर्जी दस्तखत कर धोखाधड़ी की है। और, जिन पालिसियों का सरेन्डर 2005 में कागजों में कर दिया उन मजदूरों की तनखा से इस वर्ष भी 720 रुपये एल आई सी के नाम से काट लिये गये। काटे गये इन 720 रुपये का विवरण हर वर्ष के इनकम टैक्स फार्म नम्बर 16 में होता है जिसे कम्पनी भर कर देती है। यह इसीलिये रहा है कि नौकरी छोड़ने-सेवानिवृति पर कम्पनी जीवन धारा वाली पेन्शन की बजाय एकमुश्त राशि देती रही है। मजदूरों को झाँसा देने के लिये अधिकारी कहते रहे हैं कि बार-बार आओगे, महीने के महीने पैसे मिलेंगे, पेन्शन की जगह एकमुश्त ले लो, इन पैसों से कोई काम कर लो या इन्हें डाकखाने में जमा कर दो, राशि दुगुनी हो जायेगी। अब तक साहबों के झाँसे में आ कर मजदूर पैसे ले कर जाते रहे हैं।

(शेष पृष्ठ तीन पर)

घूम रहे पर्चे....(पृष्ठ दो का शेष)

सत्येन्द्र यह सब जानकारी एकत्र कर एस्कोर्ट्स समूह के परसनल चीफ से मिला तो साहब बोले कि फैसला कर लो नहीं तो स्टाफ के बहुत लोगों की नौकरी चली जायेगी, गलती हुई है, हम गलती मानते हैं, बात यहीं खत्म करो।

सत्येन्द्र ने पेन्शन की बात की तो अधिकारी बोले कि किसी सूरत में पेन्शन नहीं मिलेगी। पैसे ले लो — 68, 500 रुपये लेने से मना करने पर बोले कि 96, 000 ले लो। मजदूर : 96, 844 रुपये तो मेरे हैं ही..

एस्कोर्ट्स समूह के मैनेजिंग डायरेक्टर को रिपोर्ट करते ई सी ओ के समक्ष मामला पहुँचने पर उन्होंने एक कमेटी बना कर सब प्लान्टों के सेक्युरिटी हैड को समिति का प्रमुख बनाया है.....

✶ बिलकुल थोथे हैं। ***आई. बी. गारमेन्ट*** कम्पनी का उत्पादन नोएडा और फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में होता है पर जब काम बहुत ज्यादा होता है तब बी-126 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में भी काम करवाते हैं। दिल्ली में सामान्य तौर पर जनवरी, फरवरी, मार्च में उत्पादन और 250 सिलाई कारीगर प्रतिदिन सुबह 9 से रात 1 बजे तक काम करते हैं। रविवार को भी काम। ई.एस.आई. सब की है पर पी.एफ. एक मजदूर की भी नहीं है। इधर 26 मार्च को मैनेजमेन्ट ने टेलरों से कहा कि काम नहीं है, हिसाब ले लो। तब आपस में बात कर मजदूरों ने तय किया कि इस्तीफे नहीं देने हैं और नोटिस की तनखा के लिये कहना है। मजदूरों ने मैनेजमेन्ट से कहा कि निकालना है तो नोटिस दे कर निकालो, इस्तीफे नहीं लिखेंगे। इस पर कम्पनी हड़बड़ा गई है। नोटिस देने की बजाय प्रतिदिन की 8 घण्टे की ड्युटी कर दी है। आठ घण्टे भी काम नहीं होता और 7 दिन से फैक्ट्री में सो कर आते हैं। साहबों की आस 10 अप्रैल पर लगी है: स्कूल बन्द हो रहे हैं, विवाहों का सिलसिला आरम्भ, गेहूँ की कटाई शुरू हो जायेगी। इन तीन कारणों से काफी मजदूर ओखला छोड़ जायेंगे... तब बचे थोड़े वरकरों से कम्पनी समझौता कर लेगी।

✶ कम्पनियाँ तनखा तक नहीं दे पा रही। कहा जाता था कि फैक्ट्री स्थापना के लिये इमारतें, मशीनें, कच्चा माल, ईंधन के प्रबन्ध के लिये पैसों के संग मजदूरों को दिये जाते पैसे पहले से होने चाहियें। कॉन्सटैन्ट कैपिटल और वेरियेबल कैपिटल हो तब फैक्ट्री होना, मजदूरी-प्रथा होना। क्या यह बातें पुरानी हो गई ? या कोई और बात है ? यहाँ तो विधान-संविधान ही मजदूरों द्वारा कम्पनियों को उधार देने का सूत्र लिये है। कानून कहता है कि 37-40 दिन काम करने के बाद मजदूर को 30 दिन के पैसे दिये जायें। जिसे संगठित क्षेत्र कहते हैं उस में मजदूर हर समय कम्पनी को उधार दिये रहते हैं और यह राशि 7 दिन से 40 दिन की दिहाड़ियों के बराबर रहती है। फुटकर मजदूरी में अब भी काम समाप्त होते ही साँय को पैसे लेने-देने का चलन है। सप्ताह में भुगतान या 15 दिन में पैसे लेना-देना भी चल रहा है पर महीने-भर काम करने के बाद तनखा सामान्य-सा बन गया है। और, व्यापक है, बढ रहा है कानून द्वारा निर्धारित समय पर भी तनखा नहीं दिया जाना। ***लखानी शूज*** की प्लॉट 265 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में तनखा में देरी के सिलसिले को देखते हुये मजदूरों ने 10 मार्च होने से पहले ही फरवरी माह की तनखा के लिये कहना आरम्भ कर दिया था। साँय देंगे, कल देंगे कहते-कहते साहब लोग समय खींचते रहे। फिर होली से ऐन पहले, 15 मार्च को मैनेजमेन्ट 1000-1000 रुपये देने लगी। यह नहीं लेंगे, तनखा दो कहने पर साहब बोले कि यह एक हजार लेने हैं तो लो अन्यथा जाओ। सवा सौ महिला मजदूरों और दो सौ पुरुष मजदूरों ने आपस में बातें की। सब मजदूरों ने मिल कर तय किया और किसी मजदूर ने 1000 रुपये नहीं लिये।

निमंत्रण

अप्रैल में 27 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail<baatein1@yahoo.co.uk>

हावी.........

यह कैसी गति हैं
कहाँ हम सब जा रहे हैं
चमचमाता हुआ यह जग
कैसा सूना सूना लग रहा है

यह भीड़ का पागलपन
कहाँ हमें लिये जा रहा है

सब कुछ यहाँ पर
हर कोई समेट लेना चाहता है

.... मजदूर

खुशियों की पोटली खोली है उसने
आशा निराशा के इस चक्रव्यूह को
तोड़ा है उसने

नई उमंग नई तरंग को
अपने मन में लिये
अग्रसर है वो।

— मनोज जेना, दिल्ली

✶ ***दिल्ली*** में 1.4.2014 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन

अकुशल श्रमिक : 8554 रुपये
अर्ध-कुशल श्रमिक : 9438 रुपये
कुशल श्रमिक : 10374 रुपये
स्नातक और अधिक (स्टाफ) : 11,310 रुपये

✶ ***हरियाणा*** में 1.1.2014 से सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन

अकुशल मजदूर : 5548 रुपये
उच्च कुशल मजदूर : 6198 रुपये

फोन करें, पोस्ट कार्ड डालें

1. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त, भविष्य निधि भवन
   14 भीकाजी कॉमा प्लेस
   नई दिल्ली—110066 ईमेल <cpfc@epfindia.gov.in>
   Ph. 011-26172671, 011-26189910
2. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन,
   सी आई जी रोड़, नई दिल्ली-110002
   Ph. 011-23235391 Fax : 011-23237136
   ईमेल <dir-gen@esic.nic.in>
3. मुख्य मन्त्री,चौथी मंजिल, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ
   फोन नं. 0172-2749396 (ऑफिस), 0172-2740877 (निवास)
4. श्रम मन्त्री, छठी मंजिल, हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ
   फोन नं. 0172-2740145
5. श्रम आयुक्त, 30 बेज बिल्डिंग, पहली मंजिल, सैक्टर-17,
   चण्डीगढ फोन नं. 0172-2701373, 2701266 (फैक्स)
6. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054
   फोन नं. 23951115, 23962823 (फैक्स)

नया दौर और पुराने तरीके

दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर नरसिंहपुर में ***बजाज मोटर्स लिमिटेड*** के मजदूर 24 फरवरी से फैक्ट्री के बाहर बैठे हैं और अप्रैल आरम्भ में भी बाहर हैं। इस फैक्ट्री में कार्य करने वाले ठेकेदारों के जरिये रखे कुछ मजदूरों से 2 मार्च को बातचीत हुई थी। फिर 28 मार्च को कुछ स्थाई मजदूरों से बातचीत हुई।

बजाज मोटर्स मजदूर : ''39-40 मील पत्थर, एन एच-8, नरसिंहपुर, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 300 स्थाई मजदूर, आठ-नो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 1500 मजदूर, और स्टाफ के 300 लोग वाहनों के इन्जनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। यहाँ लगभग 65 प्रतिशत उत्पादन ***हीरो*** दुपहियों के इन्जन पार्ट्स का होता है। और फिर, ***सुजुकी, महिन्द्रा, हार्ले डेविडसन, बी एम डब्लू*** दुपहियों के इन्जन के पुर्जे। ***निसान कार, न्यू हौलैण्ड ट्रैक्टर*** तथा तुर्की, फ्रान्स को निर्यात के लिये पार्ट्स बनते हैं। यह फैक्ट्री 1992 में आरम्भ हुई थी और आज बजाज मोटर्स समूह की आई.एम.टी. मानेसर, बिनौला, बावल, रूद्रपुर, रुड़की, हरिद्वार आदि स्थानों पर 8-10 फैक्ट्रियाँ हैं।

'' ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के लिये बजाज मोटर्स में आकर्षण दुगुनी दर से ओवर टाइम का भुगतान है। फिर भी वरकर रुकते नहीं, हर समय भर्ती चलती रहती है। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा है और चाहे जैसे भी हो, पूरा करो। लगातार खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। हर रविवार को भी ओवर टाइम। महीने में 70-80 से 150-200 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं। सी एन सी और वी एम सी मशीनें चलवाते हैं और ग्रेड हैल्पर का देते हैं व ओवर टाइम के इस समय 50 रुपये प्रतिघण्टा हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों का ब्रेक नहीं करते थे पर दस वर्ष पहले हुई हलचल ने कम्पनी को हिला दिया। तब से भर्ती के आवेदन के साथ ही त्यागपत्र भी लिखवा लेते हैं :

''ज्ञात सूत्रों से पता चला है कि आपकी कम्पनी में 6 महीने के लिये हैल्पर पद की जगह खाली है। अतः श्रीमान से निवेदन है कि हैल्पर पद पर रखने की कृपा करें।.......... मेरे घर आवश्यक कार्य पड़ जाने के कारण मैं आपकी कम्पनी में ड्युटी करने में असमर्थ हूँ। अतः श्रीमान से निवेदन है कि आज तक मेरा जो भी हिसाब बनता हो, नकद भुगतान करने की कृपा करें।

''चार-पाँच वर्ष पहले फैक्ट्री में मजदूर फिर उमड़ने-घुमड़ने लगे तब स्थाई मजदूरों की यूनियन का पंजीकरण और उसके एक बड़ी यूनियन से जुड़ने में कम्पनी ने राहत देखी। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों के कदमों का यहाँ बहुत असर पड़ा। मारुति मानेसर मजदूरों के संग खड़े होने से चिन्तित कम्पनी ने एक मुखर स्थाई मजदूर को आरोप-पत्र दिया और नवम्बर 2011 में घरेलू जाँच आरम्भ की जो कि मार्च 2013 तक चली। यह 2011 और 2012 की हवा थी कि स्थाई मजदूरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के बीच रिश्ते बढे। एक बात 2012 की गर्मियों की है। एक दिन सुबह 6 बजे की शिफ्ट में पहुँचे ठेकेदार के जरिये रखे एक मजदूर के साथ सेक्युरिटी गार्ड ने दुर्व्यवहार किया। इसे देख कर स्थाई मजदूरों ने गार्ड को आईना दिखाया। कम्पनी ने पुलिस में शिकायत की और दूसरे दिन बी-शिफ्ट में पुलिस ने फैक्ट्री में एक मुखर मजदूर को गिरफ्तार किया तब स्थाई मजदूरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने काम बन्द किया था। यह मजदूरों की बढ़ती हलचलें थी जिन्हें रोकने के लिये कम्पनी की शह पर कुछ स्थाई मजदूरों में खटपट हुई और मैनेजमेन्ट ने 5 को निलम्बित कर दिया। इस बार कम्पनी ने घरेलू जाँच नहीं बैठाई बल्कि बड़ी यूनियन के जिला तथा राज्य स्तरीय नेताओं से वार्तायें आरम्भ की। धीरज रखो, शान्त रहो की बातें खूब हुई। और 26 जून 2013 को 4 निलम्बित को ड्युटी पर ले लिया तथा रड़क रहे एक के बारे में बाद में चर्चा की बात की। इस एक के बारे में जिला व प्रान्त के लीडरों से कम्पनी ने कई बार वार्ता की। इस बीच 2011 वाली घरेलू जाँच का निष्कर्ष अन्य घरेलू जाँचों की ही तरह का : दोषी पाये गये। अप्रैल 2013 में कम्पनी ने कारण बताओ नोटिस दिया और मजदूर के उत्तर पर चुप्पी साध ली। और श्रम विभाग में सुनवाई के दौरान जून 2013 में मैनेजमेन्ट ने कहा कि वह बजाज मोटर्स का मजदूर नहीं है, बर्खास्त किया जा चुका है। जबकि, न हिसाब दिया था और न ही बर्खास्त का पत्र दिया था। ऐसे में मजदूरों में रोष को देखते हुये जिला व प्रान्त के यूनियन लीडरों ने मैनेजिंग डायरेक्टर से वार्ता की और बताया कि नौकरी से निकाला नहीं है, साहब का रुख सकारात्मक है, मैनेजमेन्ट से बात कर जल्दी से जल्दी निपटायेंगे। और छह महीने बाद, जनवरी 2014 में मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि मैनेजमेन्ट मान नहीं रही!

''फैक्ट्री में मजदूर ऊपर के लीडरों और मैनेजिंग डायरेक्टर के बीच वार्ताओं के भ्रम में रहे जबकि कम्पनी ने तैयारी की। माल का स्टॉक तैयार किया। कम्पनी द्वारा बातचीत बन्द करने पर मजदूरों को कुछ बातें समझ में आई। अपने दम पर दबाव बनाये बिना बात नहीं बनेगी। मजदूर उत्पादन घटा सकते हैं यह जानते हुये कम्पनी ने तैयारी की थी और इस सन्दर्भ में 21 फरवरी को श्रम विभाग में शिकायत की कि मजदूरों ने स्लो डाउन कर दिया है। फिर 24 फरवरी को मजदूर सुबह 6 बजे ड्युटी के लिये पहुँचे तब 15 स्थाई मजदूरों के निलम्बन के नोटिस, बाकी मजदूर गुड कन्डक्ट का फार्म भरें, और 200 पुलिस वाले फैक्ट्री के अन्दर तथा बाहर। स्थाई और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में से एक भी फैक्ट्री में नहीं गया। कम्पनी ने रविवार, 23 फरवरी को ओवर टाइम पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट चलाई थी। और, 24 फरवरी से डिप्लोमा वाले 50 ट्रेनी, 15 स्थाई मजदूर, ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर, स्टाफ के 300 लोग फैक्ट्री के अन्दर हैं। कम्पनी ने फैक्ट्री के अन्दर भोजन, नशा, टी वी, तम्बाकू, गुटका, साबुन-तेल, पेस्ट का प्रबन्ध किया है। फैक्ट्री 24 घण्टे चल रही है। अन्दर मजदूर परेशान हैं पर मैनेजमेन्ट उन्हें बाहर नहीं आने दे रही। फैक्ट्री पर पुलिस तो चौबीसों घण्टे है ही, कम्पनी ने बाउन्सर भी रखे हैं। बजाज मोटर्स का मैनेजिंग डायरेक्टर इस समय गुड़गाँव इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन का प्रधान भी है।

''यूनियन ने उप श्रमायुक्त को 24 फरवरी को ही शिकायत कर दी थी। इस बीच पाँच-छह बार श्रम विभाग में वार्तायें हुई हैं। कोई नतीजा नहीं निकला है। बड़ी यूनियन से जुड़ी गुड़गाँव में 38 यूनियनों के लीडरों ने 5 मार्च को बजाज मोटर्स के गेट पर भाषण दिये और 14 मार्च को भूख हड़ताल की। जिला मीटिंग 13 मार्च को हुई थी जिसमें अधिकारियों को 15 दिन का नोटिस दिया था। वह भी आई-गई बात हुई और अब 31 मार्च को मीटिंग है......'' ■

- ✶ *अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।*
- ✶ *बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।*
- ✶ *महीने में एक बार छापते हैं, 12,000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।